वी.सी.डी. नं.-145, इंद्रप्रस्थ (अहमदनगर पार्टी)

मु.ता.-10.08.65, व्याख्या ता.-01.06.04

एक सत् (परमात्म) संग तारे बाकी सब बोरे

आज है 10 अगस्त 65 की प्रातः क्लास। रिकॉर्ड चला है- हमारे तीर्थ न्यारे। तीर्थ कहा जाता है पार ले जाने वाले स्थान को। तीर माने किनारा और थ माने स्थान अर्थात् एक किनारे (ठिकाने) लगाने वाला स्थान। (देह रूपी) नवैया भटकती है तो नवैया को कोई किनारा चाहिए। (मायावी) तूफान लगता है तो नवैया भटकती है। ये है (आत्मा की) जीवन रूपी नवैया। शरीर रूपी नवैया कहो; क्योंकि जब तक शरीर है और शरीर में बैठने वाली आत्मा है, तो आत्मा है बिठैया, शरीर है नवैया और ये शरीर रूपी नवैया (कलियुगी) विषय-वैतरणी नदी में पड़ी हुई है। इसको ठिकाने लगाने वाला (सुप्रीम) खिवैया जब आता है तो एक किनारे लगा देता है। तो उसके बताए हमारे तीर्थ न्यारे हैं। दुनियावी तीर्थ मिसल स्थूल नहीं हैं। ओम् शांति!

मीठे-2 बच्चे पास्ट के सत्संग और अभी के सत्संग के अनुभवी बने हैं। पास्ट में कौन-सा सत्संग था? पास्ट में जो भी सत्संग था, वो जिस्मानी गुरुओं के द्वारा सिखाया हुआ सत्संग था। नाम रखते हैं सत्संग और (कितने) धक्के खिलाते रहते हैं, तो वास्तव में सत्संग नहीं हुआ, लतसंग हो गया। पास्ट के सत्संग में और अभी संगमयुग के सत्संग में वास्ट डिफ्रेन्स (बहुत अंतर) है। पास्ट यानी इस सत्संग में आने से पहले बुद्धि में क्या रहता था और अभी तुम्हारी बुद्धि में क्या रहता है? पहले बुद्धि में रहता था अमरनाथ की यात्रा करें। अभी बुद्धि में बैठा है कि भगवान कोई पहाड़ों पर नहीं बैठा हुआ है। भगवान तो (पहाड़ जैसी) ऊँची स्टेज वाला है। वह ऊँची स्टेज में रहता है। इसलिए शिव के (यादगार) मंदिर सदैव ऊँचे स्थान पर बनाए जाते हैं। कोई स्थूल रूप में ऊँचाई की बात नहीं है; लेकिन मन-बुद्धि से उसकी ऊँची स्टेज रहती है हम (भोगी) आत्माओं के मुकाबले; क्योंकि हम आत्माएँ तो जन्म-मरण के चक्र में आने वाली हैं और वह आत्माओं का परमपिता+परमात्मा (निश्चय-अनिश्चय के) जन्म-मरण के चक्र में आने वाला नहीं है, इसलिए सदैव ऊँची स्टेज में रहता है। उस ऊँची स्टेज की निशानी दिखा दी है अमरनाथ। ये रात-दिन का फर्क देखने में आता है। उन सत्संगों में सिर्फ सुनते ही रहते हैं। भगत लोग जाते हैं, सुनते हैं और वे भगवान बनकर बैठे हुए गुरु लोग उनको सुनाते हैं। जीवन में धारण कोई नहीं कर पाता।

जैसे सत्य नारायण की कथा सुनाते हैं। अब गीता में तो अर्जुन से भगवान ने कहा है कि हे! अर्जुन, तू (नरक के) नर वेश में है, मैं नर को (स्वर्ग का) नारायण बनाने के लिए आता हूँ। तो नारायण बनाने वाला नर से नारायण बनाता है; लेकिन वे सिर्फ कथाएँ सुनाते हैं नारायण की। उस सत्य नारायण की कथा में लीलावती, कलावती, लकड़हारे की कथा तो होती है; लेकिन सत्य नारायण की कथा कोई भी नहीं सुनाते। तो असली सुनाना, असली सुनना और असली गुनना, जीवन में धारण करना और वैसा बनना ये अभी परमपिता+परमात्मा आकर सिखा रहे हैं कि हे! बच्चों, अभी तुम (नरक बनाने वाले) नर रूप में हो, मैं तुम नर को नारायण बनाने के लिए आया हुआ हूँ। ये एम-ऑब्जेक्ट तुम्हारी बुद्धि में रहता है। जैसे- उन स्कूल, कॉलेजेस में भी बुद्धि में एम ऑब्जेक्ट रहती है कि डॉक्टरी की पढ़ाई पढ़ रहे हैं तो हम सर्जन बनेंगे, वकालत की पढ़ाई पढ़ रहे हैं तो हम वकील बनेंगे, ऐसे ही परमात्मा आकर जो पढ़ाई पढ़ाते हैं उसमें नर से नारायण बनाने की शिक्षा दी जाती है अर्थात् मनुष्य को देवता बनाने की (प्रैक्टिकल) शिक्षा (भी) दी जाती है।

मनुष्य देवता कैसे बने? जब उसके कर्म सुधरें तो देवता बने और मनुष्य के जब कर्म बिगड़ते हैं तो मनुष्य रूप में वह राक्षस हो जाता है। मनुष्य ही देवता बनता है। सतयुग-त्रेता में राम-कृष्ण के राज्य में वे (अद्वैत) देवताएँ थे। अभी आसुरी (द्वैतवादी विधर्मी) राक्षसों का राज्य आ गया है। उसमें सब मनुष्य असुर बन चुके हैं। जो दूसरों को तन से, मन से, धन से (हिसा कर-2 के) दुख ही दुख देते हैं, सुख जैसे दे ही नहीं सकते, उनको कहा जाता है मनुष्य के वेश में असुर या राक्षस। ऐसे नर को नारायण बनाने के लिए अभी परमात्मा बाप आकर ये (1 सद्गुरु अकालमूर्त का) सत्संग खोलते हैं। तुम्हारी दिल में (इस दुनियाँ की) कोई आस नहीं है। बस, तुम यहाँ आते हो (1) बाप से दो वचन सुनने के लिए और उनको जीवन में धारण करने के लिए। उन सत्संगों में तो जाय शास्त्रों के दो वचन सुनते हैं। शास्त्र लिखे जाते हैं (अनेक) मनुष्य गुरुओं के द्वारा। मनुष्य गुरु खुद ही (दाढ़ी-मूँछ वाले) विकारी हैं तो विकारी ज़रूर दूसरों को विकारी ही बनावेंगे। हज़ारों वर्षों से सत्संग होते आए, शास्त्र सुनते आए, सुनाते आए, दुनियाँ (की धारणाएँ) नीचे गिरती चली गई।

अभी परमपिता+परमात्मा बाप आकर कहते हैं- बच्चे, मैं शास्त्र पढ़कर फिर तुमको नहीं सुनाता हूँ। मैं तुम्हें जो कुछ डायरैक्ट सुनाता हूँ वो शास्त्रों का सार सुनाता हूँ। यहाँ तुम बच्चे बैठे हो। बुद्धि में है हम आत्माएँ बापदादा के सामने बैठी हैं और उनसे हम स्वर्ग का वर्सा लेने के लिए ज्ञान और योग सीख रहे हैं। हमारा बाप है शिव और शिवबाप जिस तन में प्रवेश करता है, जिसे त्रिनेत्री शंकर के रूप में दिखाया जाता है, वो मनुष्य आत्माओं में सबसे बड़ी आत्मा, महान आत्मा, महान देव-आत्मा। इसलिए हम सब आत्मा-2 भाइयों के बीच में वो दादा है। तो बाप+दादा से हम वर्सा लेते हैं। कौन-सा वर्सा लेते हैं? सुख-शांति का वर्सा लेते हैं। स्वर्ग में सुख भी होता है तो शांति भी होती है। उसे कहते हैं- सत्युग, सत्य का युग। अभी है झूठ का युग, कलहयुग, कलह-कलेश का युग। कलह-कलेश के युग को पलटकर सतयुगी अ+योध्या की स्थापना करने के लिए परमात्मा रामबाप को आना पड़ता है। जैसे- स्कूल में स्टूडेन्ट समझते हैं हम बैरिस्टर व इंजीनियर बनेंगे, वैसे तुम्हारी बुद्धि में भी एम ऑब्जेक्ट है हम (बंदर जैसे) नर से (मंदिर लायक) नारायण बनेंगे। कोई न कोई इम्तहान पास करके यह पद पाना होता है। तो आत्मा को ये ख़्यालात आती है अभी हम पढ़कर के फलाना बनेंगे।

सत्संग में कोई एम ऑब्जेक्ट का पता नहीं रहता कि उन सत्संगों में क्या प्राप्ति होगी! बस, ऐसे ही सुनते रहते हैं। तो जहाँ कोई एम ऑब्जेक्ट नहीं है, कोई ज़िदगी का लक्ष्य नहीं है तो लक्षण कैसे आवेंगे? जीवन में लक्ष्य लिया जाता है तो लक्षण आते हैं। डॉक्टरी के स्कूल में डॉक्टरी का लक्ष्य लेते हैं, बैरिस्टर के स्कूल में जज बनने का लक्ष्य लेते हैं तो लक्षण आ जाते हैं। वहाँ कोई-2 को आस होगी भी तो उनको अल्पकाल के लिए आस होती है। सदाकाल की आस कोई की पूरी नहीं होती। साधु-संत से माँगेंगे, क्या मागेंगे? कहेंगे, आशीर्वाद करो। ये भक्ति वा सत्संग आदि करते-2 यहाँ तक आय पहुँचे हैं। अभी हम तो बाप के सामने बैठे हैं। एक ही हमारी आत्मा में आस है कि आत्मा को बाप से स्वर्ग का वर्सा लेना है। अभी हमने रावण से नर्क का वर्सा लिया है। रावण होता है अनेक सिर वाला माना अनेक प्रकार की मत देने वाला। अनेक प्रकार की मतों पर चलते-2 हम नीचे गिर जाते। अभी राम बाप आए हुए हैं। जिनको शास्त्रों में भी एक सिर वाला दिखाते हैं। रावण अनेक सिर वाला और राम एक सिर वाला अर्थात् एक मत देते हैं। दुर्गति से सद्गति में ले जाने के लिए कोई दो-2 बातें नहीं सुनाते। उन सत्संगों आदि में वर्सा लेने की बात नहीं रहती। वहाँ तो बाप होता ही नहीं, गुरु होता है। वर्सा तो बाप से मिलता है।

तो मैं तुम ज्योति बिंदु-2 आत्माओं का बाप हूँ। जैसे- तुम्हारी ज्योतिबिंदु आत्मा भृकुटी के मध्य में बैठी हुई है। उस ज्योतिबिंदु आत्मा की रोशनी इन आँखों से निकल रही है। जब तक आत्मा भृकुटी में है, इन आँखो से रोशनी निकलती है और आत्मा भृकुटि में से चली जाती है, आँखें जैसे बटन हो जाती हैं। तुम हो ज्योतिबिंदु आत्मा, जिसकी निशानी तुम ये बिंदी या टीका मस्तक में लगाते हो। वो सत्संग वाले इन बातों को नहीं जानते (कि) ये बिंदी या टीका किस बात की निशानी है। बाप आकर अभी तुम बच्चों को बताते हैं- बच्चे, ये बिंदी या टीका दिखाने के लिए, दिखावा करने के लिए लगाने की ज़रूरत नहीं है। तुम अपने को अंदर से समझो कि मैं ज्योतिबिंदु आत्मा हूँ, स्टार आत्मा हूँ, भृकुटि के मध्य में आत्मा अजब सितारा चमक रहा है। मैं तुम ज्योति बिंदु-2 आत्माओं का बाप ज्योतिबिंदु शिव परमात्मा हूँ। जैसे- चींटी का बाप चींटी जैसा ही होता है, हाथी का बाप हाथी जैसा ही होगा, तो बिंदु-2 आत्माओं का बाप कैसा होगा? वह भी तो बिंदु होगा ना; लेकिन वह जन्म-मरण के चक्र से न्यारा है, इसलिए परमपिता+परम+आत्मा शिव कहा जाता है। वह हमारा बाप है। हम जन्म-मरण के चक्र में आते हैं, आगे-पीछे के जन्म को भूल जाते हैं, इसलिए हम बच्चे आपस में भाई-2 हैं।

तो यहाँ बाप और वर्से का, बाप और बच्चे का सम्बंध है और यहाँ बच्चों को वर्सा मिलता है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जो जैसा पुरुषार्थ करेगा, जो जैसी पढ़ाई पढ़ेगा वह उतना वैसा पद पावेगा। स्कूल अथवा कॉलेज में भी वर्से की बात नहीं होती। वे तो टीचर होते है पढ़ाने वाले। वर्से की आस सिर्फ इस समय तुम बच्चों को लगाय बैठना है। बरोबर बाबा परमधाम से आया हुआ है। कहाँ से आया हुआ है ? परमधाम से आया हुआ है। उसके लिए गायन है- ऊँचा तेरा धाम, ऊँचा तेरा काम, ऊँचा तेरा नाम तो ज़रूर वो ऊँचे स्थान पर बैठता होगा। आज तो गुरुओं ने सत्संगों में सिखाया हुआ है परमात्मा सर्वव्यापी है। अब जब परमात्मा को सर्वव्यापी कह दिया तो वह तो पाँव के नीचे की मिट्टी में भी आ गया, कण-2 में समा गया, तो बुद्धि भटकेगी या एक जगह स्थिर होगी? बुद्धि भटकती रहती है। अभी परमात्मा बाप बताते हैं- बच्चे, मैं इस पाप की दुनियाँ में व्यापक नहीं हूँ। मैं तो पाप और पुण्य की दुनियाँ से भी परे पारलोक का रहने वाला हूँ। जैसे- गीता में भी बताया है- "न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः।" न वहाँ सूर्य का प्रकाश पहुँचता है, न चंद्रमा का प्रकाश पहुँचता है और न वहाँ अग्नि की रोशनी है, मैं ऐसे धाम का रहने वाला हूँ, "तद्धाम परमं मम"॥ (गीता 15/6)। कैसा धाम है ? जहाँ जाकर के मनुष्यात्माएँ इस मृत्युलोक में वापस नहीं आतीं। इस कलहयुगी दुनियाँ में वापस नहीं आएँगी, सीधी सतयुगी स्वर्ग की दुनियाँ में जावेंगी।

तो मैं परमधाम से आया हुआ हूँ। तुमको फिर से अपना बेहद का सदा सुख का स्वराज देने के लिए आया हूँ। ये बच्चों की बुद्धि में ज़रूर होगा। फिर भी समझते हैं बाबा के सम्मुख जाने से ज्ञान के अच्छे -2 बाण लगेंगे; क्योंकि सन्मुख जो बात सुनी जाती है उसमें दृष्टि का भी फोर्स होता है, वाचा का भी फोर्स होता है, वायब्रेशन का भी फोर्स होता है और वही बोली हुई बात जब हम टेपरिकॉर्डर से सुनते हैं अथवा टी.वी. में देखते हैं तो उसमें वायब्रेशन का फोर्स, दृष्टि का फोर्स, वाचा का फोर्स उतना नहीं रहता। इसलिए बोला कि जब तक मैं सम्मुख ना आऊँ तब तक किसी को गति-सद्गति नहीं मिल सकती। परमात्मा बाप ज्योतिबिंदु है, निराकार है फिर भी कोई मनुष्य तन में आकर के हम बच्चों के सम्मुख होता है। वह सर्वशक्तिमान बाप है। बच्चे भी ज्ञान बाण मारने में तीखे बन जाते हैं; परंतु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं।

यहाँ तो बच्चे डायरैक्ट सुनते हैं। समझते हैं बाबा हमको समझा रहे हैं और कोई भी सत्संग वा कॉलेज में ऐसे नहीं समझेंगे कि परमात्मा बाप हमको पढ़ाई पढ़ा रहे हैं। हम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा ले रहे हैं। ये भी तुम जानते हो हम इस सृष्टि का चक्कर काटने के लिए आए हैं और इस चक्कर को जान गए हैं। उन सत्संगों में तो जन्म-जन्मान्तर जाना-आना करते ही रहे। यहाँ तो एक बार की बात है। भक्तिमार्ग में जो कुछ करते आए हैं वो सब पूरा होता है। वास्तव में उस मार्ग में कोई सार नहीं निकलता। अभी अल्पकाल (के) सुख के लिए मनुष्य कितना माथा भटकाते हैं, कितने भटकते रहते हैं। तुम बच्चों की बुद्धि में रहता है बाबा हमको अभी पढ़ा रहा है। बाबा ही बुद्धि में याद रहेगा और अपनी गँवाई हुई राजाई भी याद आवेगी। अभी हम जितना पुरुषार्थ करेंगे, बाबा की याद में रहेंगे और ज्ञान की धारणा में रहेंगे, औरों को भी ज्ञान की धारणा करावेंगे, उतना ही ऊँच पद पावेंगे। तो ये पुरुषार्थ करना होता है। क्या-2 पुरुषार्थ करना होता है ? पहला पुरुषार्थ है बाप को [1]याद करने का, दूसरा पुरुषार्थ है बाप से ज्ञान [2]सुनने का, तीसरा पुरुषार्थ है जो सुना हुआ ज्ञान है वो दूसरों को [3]सुनाने का और चौथा पुरुषार्थ है जीवन में सुने हुए ज्ञान की [4]धारणा करने का। ये चार सब्जेक्ट हैं इस ईश्वरीय ज्ञान के। ये तो हरेक की बुद्धि में है। फिर भी बाप बैठ बच्चों की बुद्धि को रिफ्रेश करते हैं।

तुम देखते हो हमारे सम्मुख बेहद का बाप समझा रहे हैं। इस तन के द्वारा समझा रहे हैं। उनको अपना तन तो है ही नहीं। शिव का मंदिर देखने जाते हैं तो शिव के मंदिर में तो शिव ज्योतिबिंदु रखा हुआ है माना लिंग रखा हुआ है। बिंदु का ही बड़ा आकार शिवलिंग बनाकर रख दिया है। उससे साबित होता है उसको हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान नहीं है। इसलिए भक्तिमार्ग में कहते हैं- तुम्हारे हाथ, पाँव नहीं हैं फिर भी तुम चलते हो, तुम ही सारा कार्य करते हो "बिनु पग चलै, सुनै बिनु काना, कर बिनु कर्म करै विधी नाना, आनन रहित सकल रस भोगी बिनु वाणी वक्ता वड़ जोगी", ऐसे कहते हैं ना? तो वो निराकार, निराकार होते हुए भी इस सृष्टि पर आकर किसी मनुष्य तन में प्रवेश करता है। वो कौन-से मनुष्य होते हैं? वो वही मनुष्य होते हैं जो नर से नारायण बनते हैं, नर से राम बनते हैं अथवा कृष्ण बनते हैं। उन्हीं राम और कृष्ण के तन में परमात्मा बाप आकर के हम बच्चों को पढ़ाई पढ़ाता है। उनका नाम रखता है- प्रजापिता ब्रह्मा। इनको दादा ही समझेंगे। शिवबाबा इनमें प्रवेश कर हमको पढ़ाते हैं। किनमें प्रवेश कर ? बाप और दादा में। बाप है राम बाप और दादा है कृष्ण बच्चा। तो कृष्ण बच्चे की ही सोल जो सतयुग के आदि में नारायण बनती है (वही) कलियुग के अंत में आकर के बूढ़ा मनुष्य बन जाता है। उस बूढ़े मनुष्य के तन में आकर परमात्मा बाप ब्रह्मा का पार्ट बजाते (हैं)। ब्रह्मा अर्थात् बड़ी माँ। लाज़मी (स्वाभाविक) है कि माँ होगी तो बाप भी होगा। इसलिए नाम दिया है- प्रजापिता ब्रह्मा। तो शिवबाबा इनमें प्रवेश कर हमको पढ़ा रहे हैं। तुम जानते हो पहले हमारी बुद्धि में ये बातें नहीं थीं। हम भी सत्संग तो बहुत करते थे; परंतु कभी ये ख़्याल में भी नहीं आता था कि परमपिता+परमात्मा आकर हमको ब्रह्मा द्वारा पढ़ाते हैं या कभी पढ़ाया होगा।

अभी हमने बाप को जाना है। नई दुनियाँ स्वर्ग का राज्य फिर से हमको याद आता है। अंदर में हमारे खुशी रहती है। बेहद का बाप जिसको भगवान कहते हैं वो हमको पढ़ा रहे हैं। बाबा पतित-पावन तो है ही, फिर टीचर के रूप में बैठ हमको पढ़ाई भी पढ़ा रहे हैं। परमात्मा के दो काम बताए एक तो आकर के ज्ञान सुनाकर पढ़ाई पढ़ाते हैं और दूसरा पतितों को पावन बनाते हैं। ऐसे नहीं पढ़ाई पढ़ाकर सीधे चले जाएँ। उससे काम पूरा हो जाय। ऐसे थोड़े ही कहते हैं- हे भगवान! आओ, हमको ज्ञान सुनाकर चले जाओ। ये गायन नहीं है। परमात्मा का तो गायन है- हे! पतित पावन आओ और हम पतितों को आकर के पावन बनाकर जाओ। तो बाबा पतित-पावन

तो है ही, फिर टीचर के रूप में हमको पढ़ा भी रहा है। इस दुनियाँ में कोई भी इस ख़्यालात से नहीं बैठते होंगे कि हमको बाप टीचर बनकर पढ़ाई पढ़ा रहा है।

तुम बेहद बाप की याद में बैठे हो। अंदर में तुम्हारे समझ है हम आत्माएँ अब 84 जन्मों का पूरा पार्ट बजाकर के वापस जाती हैं। हमारा 84 का चक्कर पूरा हुआ। अब 84 के चक्र को पूरा करके हम सतयुग के नए जन्म में आने वाले हैं। फिर स्वर्ग में जाने के लिए अभी हमको बाप राजयोग की शिक्षा भी दे रहे हैं। कौन-से योग की शिक्षा दे रहे हैं? जिस योग में राज़ भरा हुआ है। क्या राज़ भरा हुआ है? कि नर से नारायण कैसे बनते हैं। कहते हैं- गीता में भी राजयोग की शिक्षा है। भगवान ने आकर के अर्जुन को राजयोग सिखाया था; लेकिन उसमें तो उन्होंने कृष्ण का नाम डाल दिया। वास्तव में कृष्ण तो साकार का नाम है। साकार को सारी दुनियाँ नहीं मानती। सारी दुनियाँ तो निराकार परमेश्वर को मानती है। अगर गीता में उस निराकार का नाम होता तो सारी दुनियाँ गीता को मानती, समझती कि गीता है सर्व धर्मों का माई-बाप। तो ये बड़ी भूल हो जाने के कारण गीता को सारी दुनियाँ के, सब धर्मों के लोग नहीं मानते। सिर्फ भारत में ही मान्यता है और उसमें भी कृष्ण का नाम डाल देने से सब मुँझे हुए हैं। समझ नहीं सकते हैं कि भगवान आखिर कौन है, राम है कि कृष्ण है कि शंकर है या शिव है!

तो बाप जानते हैं, बच्चे भी जानते हैं बाप आकर ये राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं महाराजा-महारानी बनाने के लिए। और जो भी (मनुष्यों द्वारा) पढ़ाइयाँ हैं उन पढ़ाइयों को पढ़कर कोई राजा नहीं बनते। ये पढ़ाई ऐसी है जो बाप आकर के जन्म-जन्मान्तर के लिए राजाई देते हैं। दुनियाँ में इतने बड़े-2 राजाएँ हुए, महाराजाएँ हुए, बड़े-2 राज्य-अधिकारी हुए उन राज्य-अधिकारियों को राजाई, महाराजाई, रानी पद पर पहुँचाने वाला कौन था? उनको राजाई, महाराजाई किसने सिखाई? कभी तो सिखाई होगी। वर्ल्ड की कन्ट्रोलिग पावर मनुष्यों द्वारा ऐसे ही तो किसी आत्मा में नहीं आ जाती है। परमपिता-परमात्मा ही कलियुग के अंत में आकर के सतयुग के आदि की राजाई हमको देकर जाता है। बच्चे जानते हैं राजयोग की शिक्षा से हम स्वर्ग के महाराजा-महारानी बनते हैं। सिवाय बाप के और कोई सिखा भी नहीं सकता, इम्पोसिबल (असंभव) है। बाबा एक ही बार आकर के पढ़ाते हैं स्वर्ग का मालिक बनाने के लिए। वो तो समझते हैं कि भगवान बार-2 आता है। सतयुग में हिरण्यकश्यप को मारने के लिए नरसिग अवतार (के) रूप में आता है, त्रेता में रावण को मारने के लिए राम के रूप में आता है, द्वापर में कौरव-पाण्डवों का युद्ध कराने के लिए कृष्ण के रूप में आता है, कलियुग अंत में कलंकीधर अवतार लेकर के आता है; लेकिन बाप कहते हैं- बच्चे, मैं हर युग में आकर के क्या करूँगा? सतयुग में तो सब मनुष्य 16 कला सम्पूर्ण होते ही हैं। वहाँ सोलह कला सम्पूर्ण को फिर और कौन-सी ऊँची कला उठा करके बनाऊँगा? त्रेता में राम का राज्य होता है। राम राज्य का तो कितना गायन है! कितना सुख-शांति से भरपूर राज्य दिखाते हैं वहाँ भी मेरे को आने की क्या दरकार? अगर द्वापर में कृष्ण के रूप में आया होता तो कृष्ण भगवान ने आकर के द्वापर के अंत में महाभारत युद्ध कराया, तो क्या पापी कलियुग की स्थापना कर दी ? ये भी नहीं हो सकता। भगवान ऊँचा कार्य करके जाता है तो ऊँची दुनियाँ बनाकर जाएगा। पापी कलियुग की स्थापना करके थोड़े ही जाएगा। तो भगवान अभी कलियुग के अंत में इस सृष्टि पर आता है। कलियुग के अंत में जब वो आता है तो चारों युगों की शूटिग कराता है। जैसे- कोई फिल्म होती है, नाटक होता है, ड्रामा होता है तो मोस्टली (अधिकतर) चार सीन वाला होता है। ऐसे ही ये सृष्टि रंगमंच रूपी ड्रामा है। इसमें चार युगों के चार सीन हैं। बाप आकर के चारों सीन की रिहर्सल कराते हैं। सतयुग की रिहर्सल पूरी होती है तो वह प्रत्यक्ष होता है। ऐसे ही त्रेतायुग की रिहर्सल पूरी होती है तब भी

भगवान के रूप में प्रत्यक्ष होता है और द्वापरयुगी रिहर्सल पूरी होती है तो कृष्ण बच्चे के रूप में प्रत्यक्ष होता है और कलियुग के अंत में तो शास्त्रों में भी गाया हुआ है- 'कंलकीधर अवतार', वो दुनियाँ भर के ढेर सारे कलंक अपने सिर के ऊपर लेकर के संसार में प्रत्यक्ष होता है। दुनियाँ के लोग उसको नहीं पहचान पाते। इसलिए गीता में लिखा हुआ है- मैं जब साधारण मनुष्य तन में आता हूँ तो मनुष्य मुझे मूढ़मति समझ करके खुद मूढ़मति जैसा पार्ट बजाते हैं और मेरे को नहीं पहचान पाते।

तो बाप आकर बता रहे हैं कि तुम्हारी बुद्धि में पढ़ाई की एम ऑब्जेक्ट रहती है। तुम ताकत से पढ़ते हो। अभी तुम मीठे बच्चों की बुद्धि में है कि हम देखो कहाँ बैठे हैं! मनुष्यों की ख़्यालात तो कहाँ की कहाँ चली जाती है। पढ़ाई (के) समय पढ़ने की बात बुद्धि में होनी चाहिए। खेलने के समय खेलने की बात बुद्धि में होनी चाहिए। अभी तुम जानते हो हम बेहद के बाप के सन्मुख बैठे हैं। आगे तो हम ये बात नहीं जानते थे। कोई भी मनुष्य मात्र नहीं जानते (कि) भगवान आकर राजयोग सिखलाते हैं। गीता पढ़ते रहते हैं; लेकिन ये नहीं जानते (कि) गीता से भगवान ने राजयोग सिखाया था। गीता, भागवत, वेद, शास्त्र आदि पढ़ते-2, सत्संग करते हुए मनुष्यों की बुद्धि में रहता कुछ भी नहीं है। अभी मैं बाप आया हुआ हूँ तुम बच्चों को सब कुछ समझाने के लिए।

10.08.65 की वाणी का दूसरा पेज, सत्संग तो बहुत बच्चों ने किए होंगे। माताएँ भी बहुत शास्त्र आदि पढ़ती हैं; परंतु ये ख़्यालात किसी की बुद्धि में नहीं आवेगा कि भगवान आकर बैठ करके सत्संग कराते हैं। सत्संग का अर्थ ही है- सत् का संग। इस दुनियाँ में तो सब झूठे हैं, कोई सच्चा नहीं है, तो सत्संग कैसे हुआ? भगवान बाप ही आकर के इस सृष्टि पर सच्चा सत्संग सिखाता है। माताएँ बहुत शास्त्र पढ़ती हैं; परंतु कब उनकी बुद्धि में भी ख़्यालात नहीं आता है। अभी तुम बच्चों ने समझा है। हम जन्म-जन्मान्तर भक्ति करते आए। ये ज्ञान बाप के सिवाय और कोई नहीं दे सकता। जब तक बाप न आए तब तक विश्व के मालिकपने का वर्सा किसी को मिल नहीं सकता। भले इस दुनियाँ में हिटलर हुए, नेपोलियन हुए, मुसोलिनी हुए उन्होंने बहुत आकांक्षा की (कि) हम सारे विश्व के ऊपर राजाई प्राप्त करें; लेकिन बाहुबल के आधार पर कोई भी दुनियाँ में राजाई नहीं कर सकता। ये नियम बना हुआ है। बाप ही आकर के जब राजयोग सिखाते हैं तो राजयोग बल से मनुष्य विश्व की बादशाही पाते हैं। जिसका शास्त्रों में वर्णन है। शंकर जी को विश्वनाथ की उपाधि दी हुई है- सारे विश्व का नाथ। उनकी यादगार में झंडा भी बनाते हैं। 'विश्व विजय करके दिखलावे तब होवे प्रण पूर्ण हमारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा'।

वास्तव में झंडे में जो तीन कपड़े हैं वो ब्रह्मा, विष्णु और शंकर इन त्रिदेवों की यादगार है। शरीर को ही कपड़ा कहा जाता है। उन तीन शरीर रूपी वस्त्रों की यादगार में जो तिरंगा झंडा आज भारत में बनाते हैं वो तिरंगा झंडा कोई-कागज़ का झंडा, कपड़े का झंडा-विश्व के ऊपर विजय प्राप्त करना नहीं सिखाता है। ये तो तीन विशेष श्रेष्ठ मनुष्य आत्माएँ हैं, देवात्माएँ हैं जिन्होंने सारे विश्व के ऊपर राजयोग बल से राजाई प्राप्त की थी। सारे विश्व के ऊपर कन्ट्रोल किया था। तो विश्व के मालिकपने का वर्सा कैसे मिलता है वो तुम्हारी बुद्धि में है। ये किसी की बुद्धि में नहीं आता है (कि) हम भगवान के बच्चे हैं वा भगवान हमारा स्वर्ग का रचयिता है। अंग्रेज़ों में हैवनली गॉड फादर कहा जाता है। तो जब बाप हमारा स्वर्ग का रचयिता है, हैवनली गॉड फादर है तो फिर हम नर्क में क्यों बैठे हैं? करोड़पति का बच्चा हो, अरबपति का बच्चा हो, तो वह पैसे-2 के लिए मोहताज होगा क्या? हो सकता है क्या? नहीं हो सकता। वह तभी मोहताज हो सकता है जब अपने बाप से बिछुड़ जाए। तो ऐसे ही हम बच्चों को परमात्मा बाप मिला हुआ है। हमारी बुद्धि में बैठ गया है कि परमात्मा बाप आकर हमको राजयोग की पढ़ाई पढ़ा रहे हैं;

लेकिन इतना होते हुए भी हम बच्चे अपने को दुःखी क्यों महसूस करने लगते हैं? कारण कि परमात्मा बाप के साथ बुद्धि का जो योग होना चाहिए वो बुद्धियोग अभी हमारा जुटा नहीं है। माया रावण बार-2 हमारी बुद्धि को फतका देती है, भटका देती है और अनिश्चय बुद्धि बना देती है। इसलिए गीता में भी लिखा हुआ है- 'अनिश्चय बुद्धि विनश्यते, निश्चयबुद्धि विजयते'। तो सारा मदार हमारे निश्चय के ऊपर है।

हमें स्वर्ग में क्यों नहीं होना चाहिए। इस नर्क में हम दुःखी हो करके क्यों बैठे हुए हैं ? भगवान को हे पतित-पावन कहते हैं; परंतु ये बुद्धि में नहीं आता है कि हम दुःख में क्यों आये हैं? बाप कब बच्चों को दुःख देता है क्या? भक्तिमार्ग में तो ऐसे ही कह देते हैं- तू ही सुख देता है, तू ही दुःख देता है। अब भगवान बाप है (तो) वो बच्चों को दुःख देगा क्या? भगवान तो आकर के सुख की सृष्टि रचते हैं, सतयुग-त्रेतायुग की नई दुनिया रचते हैं, राम-कृष्ण की दुनिया रचकर जाते हैं। वो कोई दुःख की दुनिया रचकर नहीं जाते। बाप सृष्टि रचते हैं तुम बच्चों के लिए। बाप तुम बच्चों के लिए जो सृष्टि रचते हैं वो दुःख की सृष्टि नहीं रच सकते; क्योंकि दुनियाँ में भी जो हद के बाप होते हैं वो बच्चों के लिए सुख-शांति चाहते हैं, दुःख-अशांति नहीं चाहते। मकान पुराना हो जाता है तो बच्चों को नया मकान देकर जाते हैं। वो तो हद की बात है। ये है सृष्टि रूपी बेहद का मकान। बाप आकर के ये बेहद की सृष्टि रच रहे हैं। तो क्या बाप दुःख के लिए सृष्टि रचते हैं ? नहीं। ये हो ही नहीं सकता। अभी तुम बच्चे श्रीमत पर चलने वाले हो। तो बच्चे (जिस) श्रीमत पर चलते हैं, जिसको कहा जाता है श्रीमद् भगवद् गीता, भगवान की उस मत को बताने वाली श्रीमद्भगवद् गीता भगवान खुद आकर के मुख से सुनाते हैं, तब सारी सृष्टि का कल्याण होता है।

भल कहाँ भी दफ़्तर में वा धंधे आदि पर बैठे हो; परंतु बुद्धि में तो है कि हमको पढ़ाने वाला भगवान है। तो बुद्धि में ज़रूर आता है। बुद्धि में आएगा तो याद भी आएगा। तो बाप कहते हैं- बच्चे, मुझे याद करो। मेरे नाम का जाप करने की दरकार नहीं है। मैं क्या काम करके जाता हूँ, मेरे उस काम को याद करो। काम के आधार पर भगवान के अनेक प्रकार के नाम दिए हुए हैं, इसलिए नाम की इतनी महिमा होती है। नहीं तो नाम रटने से कोई फ़ायदा नहीं होता है। हमको रोज़ सबेरे भगवान की पढ़ाई पढ़ने के लिए क्लास में जाना पड़ता है। क्लास में जाने वालों को ही याद पड़ता होगा। बाकी जो क्लास में नहीं आते हैं वो पढ़ाई को और पढ़ाने वाले को समझ कैसे सकेंगे? जिनकी बुद्धि में जितना महत्त्व बैठा होगा उतनी ही पढ़ाई पढ़ेगा। ये नई बातें हैं। उस पढ़ाई में भी जो बच्चे रेगुलर होते हैं वो अच्छा इम्तहान पास करके ऊँच पद पा लेते हैं। यहाँ भी बाप की पढ़ाई है। बाप आकर के जो पढ़ाई पढ़ाते हैं उसमें भी नम्बरवार पढ़ने वाले निकलते हैं। कोई तो ऐसे श्रेष्ठ पढ़ने वाले फर्स्ट क्लास पास होते हैं, पास विद् ऑनर जाते हैं जो भगवान के सिर के ऊपर 8/9 (मणकों) की माला के रूप में दिखाए जाते हैं। 9 मणकों के रूप में वो माला भगवान शंकर के सिर के ऊपर विराजमान दिखाई जाती है। माने 9 श्रेष्ठ आत्माएँ हैं जिनको भगवान ने मारे प्यार के अपने सिर के ऊपर चढ़ा रखा (है)। दूसरी फर्स्ट क्लास आत्माएँ वे होती हैं, जो 108 की माला में आती हैं। जो वैजयन्ती माला होती है (उस)में 108 मणके होते हैं। वो 108 मणके 108 श्रेष्ठ आत्माओं की यादगार है। जिन्होंने श्रेष्ठ पढ़ाई पढ़कर, फर्स्ट क्लास पढ़ाई पढ़कर दुनियाँ में यह पद पाया है। जिनकी यादगार में हर धर्म में वो माला घुमाई जाती है। हिदू हों, मुसलमान हों, सिक्ख हों, इसाई हों, यहूदी हों सब धर्मों में 108 की माला घुमाई जाती है। इसके बाद फिर होती है 1,008 की माला। कहते भी हैं- श्री-2 1,008 सद्गुरु जी महाराज। तो वो तो गुरु ने टाइटिल रखा लिया है। वास्तव में है तो भगवान की बात। जो हज़ार आत्माएँ

भुजाओं के रूप में भगवान की विशेष सहयोगी बनती हैं। भगवान को सहस्त्र भुजाधारी कहा जाता है। सहस्त्र बाहु भी कहा जाता है। तो वो भगवान इस सृष्टि पर आकर के हज़ार आत्माओं को अपना विशेष सहयोगी बनाता है। इसलिए 1,008 की माला भी प्रसिद्ध है। फिर है 16,108 (की माला) जो गोप-गोपियों के रूप में दिखाई जाती है। जिन्होंने गुप्त पार्ट बजाया है, गुप्त सम्बंध परमात्मा के साथ जोड़ा है उनकी यादगार में वो है 16,108 की माला। ये वो आत्माएँ हैं जो भले किसी जन्म में राजाई प्राप्त न करती हों; लेकिन राजयोग सीख करके जन्म-जन्मान्तर राजघराने में जन्म लेने की अधिकारी बन जाती हैं। बाकी जो क्लास में नहीं आते हैं वो पढ़ाई पढ़ने और पढ़ाने वाले को समझ कैसे सकेंगे? तो पढ़ाई में रेग्युलैरिटी और पंक्चुऐलिटी ये दो बातें ज़रूरी होती हैं। उस लौकिक पढ़ाई में भी (ये) दो बातें ज़रूरी हैं और इस ईश्वरीय पढ़ाई में भी ये दो बातें ज़रूरी हैं।

ये नई बातें हैं जिसको तुम बच्चे ही जानते हो। बेहद का बाप जो नई दुनियाँ बनाने वाला है, (वह) बैठ नई दुनिया के लिए हमारा हीरे जैसा जीवन बनाते हैं। जब से माया का प्रवेश हुआ है, तो माया का प्रवेश होने के कारण हम कौड़ी मिसल बन चुके। माया का प्रवेश कब से हुआ? जब से इस दुनियाँ में द्वैतवाद शुरू हो गया। दो-2 राज्य शुरू हो गए, दो-2 मतें शुरू हो गईं, दो-2 धर्म शुरू हो गए। तब से द्वैतवाद के कारण ये दुनियाँ कौड़ी मिसल बन गई। कब से? द्वापरयुग से। नाम क्या दिया? द्वैतवादी राज्य का नाम रख दिया- द्वापरयुग। दो पुर, एक पुर नहीं रह गया माने एक की मत नहीं चलती है। सतयुग-त्रेता में एक ही राजा होता था, एक ही धर्म होता था, एक ही राज्य होता था, एक ही मत होती थी, एक ही वर्ण होता था, इसलिए दुनियाँ में एकता थी। आज दुनियाँ में अनेकता क्यों भरी हुई है? क्योंकि दो-2 मठपंथ चलाने वाले, द्वैत फैलाने वाले इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरुनानक ढाई हजार वर्ष के अंदर इस दुनियाँ में आ गए और उन्होंने दुनियाँ को दो-2 फाड़ों में बाँट दिया। तो कलाएँ (तेजी से) कम होती जाती हैं। मनुष्य की बुद्धि भटकती जाती है, द्वैतवाद बढ़ता जाता है, आपस में लड़ाई-झगड़े बढ़ते जाते हैं। माया ऐसा खाती रहती है जो हमको कुछ भी पता नहीं पड़ता।

अभी बाप ने आकर बच्चों को जगाया है। बच्चों को अज्ञान की नींद से जगाने के लिए बाप को आना पड़ता है। कोई स्थूल नींद की बात नहीं है। ये अज्ञान नींद की बात है। अज्ञान की नींद में तुम सब सोये पड़े थे। जिसको मुसलमान लोग कह देते हैं कि आत्मा जब शरीर छोड़ती है तो कब्रदाखिल हो जाती है। जो-2 शरीर छोड़ता जाता है वो कब्रदाखिल होता जाता है। उसकी आत्मा कब्र में दाखिल हो जाती है। वास्तव में आत्मा कभी कब्र में दाखिल नहीं होती। आत्मा तो अजर, अमर, चैतन्य है। वो एक शरीर छोड़ती है तो (दूसरा ले लेती है)। जैसे- गीता में कहा है कि आत्मा एक वस्त्र त्यागती है तो दूसरा शरीर रूपी वस्त्र धारण कर लेती है। ऐसे ही आत्मा तो अजर, अमर, अविनाशी है वो कभी मिट्टी में नहीं मिलती; लेकिन इतना ज़रूर है कि जब द्वापरयुग से अनेक मत/बहुमतें दुनिया में आती हैं तो आत्मा नीचे गिरती जाती है। उसकी कलाएँ तेज़ी से नीचे गिरती जाती हैं। जड़ बुद्धि होती जाती है। जड़त्वमयी बुद्धि में आत्मा शरीर को याद करने लगती है। अपने को भी शरीर, देह समझती है और दूसरों को भी मिट्टी/देह के रूप में देखने लग पड़ती है। तो मिट्टी को देखते-2 आत्मा जड़वत हो जाती है। उस जड़त्वमयी बुद्धि को परमपिता+परमात्मा आकर के ज्ञान देकर फिर से सूरजीत बनाता है। अज्ञान नींद से जगाता है।

ज्ञान तो ज्ञान-सागर बाप ही देता है। एक ज्ञानसागर बाप के सिवाय और कोई ज्ञानरत्न दे भी न सके। इसलिए दिखाते हैं कि जब सागर मंथन हुआ तो सागर में से 14 रत्न निकले। वो रत्न देवताओं और असुरों में बाँटे

गए। वास्तव में ये है ज्ञान सागर बाप की बात। हमारा एक ही मोस्ट बिलवेड बाप है जो ज्ञान का सागर है, पतित-पावन है, वही आकर के हमको ज्ञान दे सकते हैं। अभी बच्चे जान गए हैं इस युक्ति से बाबा हमको पावन बनाते हैं। पुकारते हैं कि कैसे आकर के पावन बनावेंगे। 'हे पतित-पावन!' सिर्फ कहने से थोड़े ही बन जावेंगे। पतितों को पावन बनाने के लिए उनको संग के रंग में आना पड़े। बाप आता है हम बच्चों को संग के रंग में लेकर, दृष्टि का संग का रंग देता है, वायब्रेशन का संग का रंग देता है, वाचा का संग का रंग देता है, कर्मेन्द्रियों का भी संग का रंग देता है और उस संग के रंग से हम बच्चों को आकर ऊपर उठाता है। दुनिया में भी पतन कैसे हुआ? दुनियाँ में भी अनेक मत फैलाने वाले धर्मपिताएँ आए। जैसे- मानवीय इतिहास में आज से ढाई हज़ार वर्ष के अंदर-2 इब्राहीम आए इस्लाम धर्म फैलाया, महात्मा बुद्ध आए बौद्ध धर्म फैलाया, क्राइस्ट आए क्रिश्चियन धर्म फैलाया और उनके संग के रंग में आकर के दुनियाँ नीचे गिरती चली गई। तो अनेकों के संग के रंग में आने से दुनिया नीचे गिरती है और एक परमपिता+ परमात्मा जो अजन्मा, अभोक्ता, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी कहा जाता है उसके संग के रंग में जब हम बच्चे आते हैं तो हम ऊँचे उठते हैं, पतित से पावन बनते हैं।

अभी हमारी दृष्टि-वृत्ति अपवित्र बन गई, पतित बन गई, हमारी इन्द्रियाँ नं. वार व्यभिचारी, अपवित्र बन गईं। अब उन कर्मेन्द्रियों को परमात्मा बाप आकर के (पवित्र बनाते हैं और) श्रेष्ठ इन्द्रियों का प्यार करना सिखाते हैं, जिन श्रेष्ठ इन्द्रियों के अहिसक और अव्यभिचार से सतयुग-त्रेता में भी सुखदायी पैदाइश होती है। आजकल की दुनियाँ में तो जो भ्रष्ट कर्मेन्द्रियों की जो गू-मूत वाली पैदाइश है, मूतपलीती कर्म के आर्कषण की पैदाइश है, उससे बिच्छू-टिडन पैदा हो रहे हैं। माँ-बाप को ही खा जाते हैं। देखो, आज से चार सौ साल पहले औरंगज़ेब पैदा हुआ। कौन-से बाप से ? शाहजहाँ से। उसने अपने बाप को ही उठाकर कहाँ डाल दिया? जेलखाने में डाल दिया। तो ऐसे-2 बिच्छू-टिडन आज से 200/300 साल पहले ही पैदा होने लगे। आज तो घर-2 में यही हालत है। ऐसा कोई घर नहीं है जिसमें बच्चे सुखदायी पैदा होते हों। तो बाप आकर के कैसे ऐसा पावन बनाते हैं कि तुम नर से नारायण जैसे श्रेष्ठ बन जाते हो? लेकिन पतित से पावन कहने से नहीं बन जावेंगे। उसके लिए पुरुषार्थ करना पड़ेगा। तुम जानते हो सब इस समय पतित-भ्रष्टाचारी हैं। कोई छाती ठोककर के नहीं कहता या कह सकता कि हम श्रेष्ट इन्द्रियों से आचरण करने वाले श्रेष्टाचारी हैं, हम श्रेष्ठ इन्द्रियों से संतान पैदा करने वाले हैं। नहीं। मोर की मिसाल कृष्ण को मस्तक में मयूर पंख दिखाते हैं। आज भी भारतवर्ष में राष्ट्रीय पक्षी मोर माना जाता है। किस बात की निशानी है? वो मोर के पवित्रत कर्म की निशानी है। कहते हैं कि मोर मैथुन से संतान पैदा नहीं करता। मोर जब नाचता है तो मोरनी उसकी आँखों का आँसू पी लेती है। आँखों की उसी श्रेष्ठ इन्द्रिय के जल से उसको संतान (की) पैदाइश होती है। तो जब आज भी ऐसी मिसाल दिखाई देती है तो सतयुग-त्रेता में तो कितनी श्रेष्ठ पैदाइश होती होगी। अभी तो सारी दुनिया भ्रष्टाचारी है। इस पापी कलियुग में कोई भी श्रेष्ठाचारी नहीं है।

इसलिए भगवान कहते हैं- ये ख़ास कामेन्द्रिय का भ्रष्ठाचार बंद करो। भगवान आकर के पहली बात क्या कहते हैं ? अब इस जनरेशन की दरकार नहीं है। इस दुनियाँ में जितनी जनरेशन बढ़नी थी 500/700 करोड़ वो लगभग बढ़ चुकी। अब ये दुनियाँ खलास होने वाली है। एटम बॉम्ब बन चुके हैं। आज से 65/70 साल पहले एटम बॉम्ब नहीं बने थे। 60/65 साल पहले इस सृष्टि पर ढेर के ढेर भगवानों (का) नाम-निशान नहीं था। 60/65 साल के अंदर ही भारत वर्ष ढेर के ढेर भगवान में पैदा हो गए। तो ज़रूर कोई सच्चा हीरा भी इस सृष्टि पर आया हुआ होगा। जब सच्चा हीरा आता है तो एक तरफ़ नई दुनिया की स्थापना के लिए मनुष्यों की बुद्धि में ज्ञान

का आरोपण करता है और दूसरी तरफ इस पुरानी पतित दुनिया के विनाश के लिए एटम बॉम्ब्स का भी निर्माण करा लेता है। वो एटम बॉम्ब इस सृष्टि पर तैयार हो चुके हैं, जिन एटम बॉम्ब्स के बारे में गीता में भी वर्णन है- हे! अर्जुन को मुँह खोलकर बता दिया-ये जो मेरी दाढ़े हैं ना, इन दाढ़ों के बीच में ये सारी सृष्टि चबायी जाने वाली (है)। ये ऊपर की दाढ़ें और नीचे की दाढ़ें, ऊपर आकाश में भी एटम बॉम्ब तैर रहे हैं और पृथ्वी के अंदर या सागर में भी एटम बॉम्ब घुसाए हुए हैं, इन दोनों तरह के एटम बॉम्ब्स के बीच में ये सारी दुनियाँ चबायी जाने वाली है।

लोग अज्ञान की नींद में सोये पड़े हैं; (क्योंकि) शास्त्रों में लिखा हुआ है कि अभी तो ये दुनिया चालीस हज़ार वर्ष चलेगी; लेकिन अब ये दुनियाँ चालीस हज़ार वर्ष चलने वाली नहीं है। बुद्धि ही भ्रष्ट हो चुकी है। बुद्धि में बैठता ही नहीं। उनको क्या पता कि भ्रष्टाचार किस का नाम है, जो अपने कर्म को भ्रष्टाचारी नहीं समझते हैं। कोई ने रिश्वत ले लिया, रिश्वत खा ली, चोरी कर ली, झूठ बोल दिया तो उसको भ्रष्टाचार समझते हैं। वास्तव में श्रेष्ठ ज्ञान-इन्द्रियों के आचरण को ही श्रेष्टाचार कहा जाता है। तो पहले नम्बर में भ्रष्टाचार ये है- विख पीना और विषय-विष पिलाना। विषय-वैतरणी नदी में गोते खाते रहते हैं, दूसरों को भी खिलाते रहते हैं। खुद भी निकलने का रास्ता नहीं जानते और दूसरे भी निकलने का रास्ता नहीं जानते। हमारी ये जीवन रूपी नैया जो विषय-वैतरणी नदी में गोते खा रही थी अब (उसको) इस विषय-वैतरणी नदी से बाप बाहर निकालने के लिए आए हुए हैं। यहाँ हम बच्चे सम्मुख सुनते हैं तो हमारी बुद्धि बाप के साथ हिलग जाती है; क्योंकि हमारी बुद्धि में आता है कि ये ज्ञान तो सिवाय बाप के और कोई सिखा नहीं सकता। फिर हम बच्चे जब कुसंग की तरफ जाते हैं, बहुतों से मिलते-जुलते हैं तो ऐसे वातावरण में आने से हमारी भी बुद्धि घूम जाती है। जो अवस्था हमारी सन्मुख रहने में होती है वो नहीं रहती। अवस्था बदल जाती है।

पतित होने और पावन होने, ऊपर उठने और नीचे गिरने का कारण क्या बताया? बाप के सन्मुख आते हैं तो निश्चयबुद्धि हो जाते हैं, बाप से दूर चले जाते हैं तो वातावरण के प्रभाव में आकर के अनिश्चय बुद्धि बन जाते हैं। कारण क्या हुआ ? एक सत् का संग तारे और दुनियाँ में बाकी सब झूठे हैं। सब मायावी रूप हैं। इन आँखों से जो कुछ देखते हैं वो सब माया का रूप है। इसलिए तुलसीदास ने भी कहा- "गो-गो चर जहाँ लगि मन जाई। सो सब माया जानो भाई।" ये आँख इन्द्रिय हैं ना, ये आँख इन्द्रिय जहाँ-2 तक जा रही है, इस आँख इन्द्रिय से जो कुछ हम देखते हैं वो सब माया का रूप है। कोई सत्य नहीं है, सब असत्य है। एक सुप्रीम बाप ही सत्य है जो इन आँखों से दिखाई नहीं पड़ता। हमारी आत्मा ही इन आँखों से दिखाई नहीं पड़ती तो आत्मा का जो बाप है परमपिता-परमात्मा शिव ज्योतिबिदु , वो इन आँखों से कैसे देखने में आएगा? वो तो जब किसी तन में आकर के ज्ञान सुनाता है, (गीता 9/11) तब हमारी बुद्धि में बैठता है कि ये ज्ञान सिवाय निराकार परमपिता-परमात्मा के और कोई साकार मनुष्य तनधारी दे नहीं सकता।

तो यहाँ हम सम्मुख आकर बैठते हैं तो हमको नशा चढ़ जाता है। परमात्मा बैठ हमको ज्ञान के बाण मारते हैं। इसलिए मधुबन की महिमा है- 'मधुबन में मुरलियाँ बाजे'। तो जो वृंदावन धाम है, उस वृंदावन धाम में भक्तों ने एक यादगार बगीचा बना दिया है, उस बगीचे का नाम रख दिया है- मधुबन। तो भक्तिमार्ग में तो सिर्फ यादगार बनाते हैं। यहाँ यादगार की बात नहीं है। यहाँ तो प्रैक्टिकल बातें हैं। गाते भी हैं - मधुबन में मुरलिया बाजे और मुरली तो बहुत जगह जाती है; परंतु यहाँ हम सन्मुख बैठ समझते हैं और दूसरों को जाकर समझाते हैं। बच्चों को

सावधानी देते हैं कि बच्चे खबरदार रहना, कोई उल्टा-सुल्टा संग नहीं करना। यहाँ बाप के सन्मुख आते हो (और) सुन करके जाते हो तो बाहर जाकर के वही वायब्रेशन फैलाना। दूसरों के प्रभाव में नहीं आ जाना। गुरु-गोसाई आदि तुमको पुरानी-2 बातें सुनाते रहते हैं, डरा देते हैं और इस पढ़ाई से ही छुड़ा देते हैं, तो तुम उनके प्रभाव में आ गये ना। बाप की बातें भूल जाते हो फिर बाप से सम्पर्क भी नहीं करते हो। बाप कहते हैं- बच्चे, मेरे से मिलने के बाद महिने, 2 महिने में मेरे को चिट्ठी ज़रूर लिखते रहना। अगर चिट्ठी नहीं आती है तो बाप समझेंगे (कि) बच्चा मर गया। तो ये प्रतिज्ञा करो कि हम एक सत् बाप का ही संग करेंगे और कोई का संग नहीं करेंगे। हम एक से ही सुनेंगे और एक का ही फ़रमान मानेंगे।

तुम सबका बाप, दादा, टीचर, सद्गुरु एक ही है। उस दुनियाँ (में) तो बाप अलग होता है, दादा अलग होता है, टीचर अलग होता है और गुरु अलग होता है। और यहाँ? यहाँ वही हमारा बाप है, वही एक हमारा दादा है, वही हमारा टीचर है, वही सद्गुरु (है)। तो यहाँ है सब नई बातें। तुम बाप का परिचय दे सकते हो। ज्ञान की बातें जानते हो। सब नेती-2 कहते आए कि हम इस सृष्टि के आदि, मध्य, अंत को नहीं जानते। गीता में भी अर्जुन को भगवान ने बताया- हे! अर्जुन, तू अपने आगे-पीछे के जन्मों को नहीं जानता, मैं आकर के तेरे को बताता हूँ। हम रचयिता और रचना को नहीं जानते थे। अभी बाप आते हैं वही आकर के समझाते हैं।

इन कलियुगी गुरुओं में भी सब नम्बरवार हैं। ऐसा एक भी गुरु नहीं है जो सुप्रीम बाप समान हो। बाप आकर के सिर्फ हम बच्चों की बाप समान स्टेज बना करके जाता है। बाकी दुनियाँ में और किसी की बाप समान स्टेज नहीं बनती। इसलिए जो भी अनुष्ठान होते हैं उन अनुष्ठानों में भगवान का पूजन करने से पहले नवग्रहों का पूजन होता है नौ श्रेष्ठ आत्माएँ हैं उसमें उनका पूजन नूँधा हुआ है। कोई के तो लाखों फॉलोवर्स होते हैं। तुम समझते हो हमारा सद्गुरु तो एक ही है। यहाँ मरने आदि की बात नहीं है। यहाँ तो बाप आकर के तुमको जीते जी मरना सिखाते हैं। शरीर से मरने की कोई बात नहीं है। जैसे वहाँ काशी में जाते हैं तो काशी करवट खा लेते हैं। अंधा कुँआ है, उसमें नीचे खांडा लगा होता था, ऊपर से गिरते थे तो मर जाते थे। समझते थे शिव को अर्पण हो गया। यहाँ मरने-मारने की ऐसी कोई बात नहीं है। यहाँ तो बाबा तुम्हें समझाते हैं कि तुम जीते जी मर जाओ। जो श्रीमत पर चलते हैं वो जैसे उस दुनियाँ से जीते जी मर जाते हैं। वो बाप तो तुम्हारा अमर है इसलिए अमरनाथ कहा जाता है। हमारी आत्मा को भी अमरकथा सुनाकर अमर बनाते हैं, अमरपुरी में ले जाते हैं और हमको सुखधाम में भेज देते हैं। अब तुम बच्चे निर्वाणधाम का अनुभव करने वाले हो।

10.8.65 की वाणी का तीसरा पेज। वहाँ जीना-मरना नहीं होता है। बाप का जो धाम है वहाँ आत्मा के जीन-मरने की बात नहीं है। आत्मा तो वैसे भी जीती-मरती नहीं है, सिर्फ शरीर छोड़ती है तो कहा जाता है मृत्यु को प्राप्त हुआ और नया चोला धारण करती है तो कहते हैं नया जीवन धारण किया। बुद्धि में रहता है हम आत्मा ये शरीर छोड़ जाकर के बाप के पास बैठेंगे। फिर जिसने जितना पढ़ा उस अनुसार वो पद पावेगा। ये पढ़ाई तो ऊँच ते ऊँच परमात्मा बाप की पढ़ाई है। 16 कला सम्पूर्ण कहा जाता है तो 16 कला सम्पूर्ण बनाने की पढ़ाई होगी। इसलिए नाम रखा हुआ है- 16 कला कृष्णचंद्र, रामचंद्र। काहे से मिसाल देते है? चंद्रमा से; क्योंकि चंद्रमा 16 कला सम्पूर्ण भी बनता है और चंद्रमा कम कला का या कलाहीन भी बनता है। तो मनुष्यात्माएँ कलियुग में जब कलाहीन बनती हैं तो उनकी बुद्धि में भौतिक अज्ञान का अँधेरा ही अँधेरा हो जाता और सतयुग के आदि में जब आत्माएँ 16 कला सम्पूर्ण बनती हैं तो बुद्धि में आत्म स्थिति की रोशनी ही रोशनी हो जाती है।

तो एक शरीर छोड़ आत्मा जाकर के बाप के पास बैठेगी, फिर जिसने जितना पढ़ा उस अनुसार पद पावेंगे। क्लास ट्रांसफर हो जाता है। जितना अच्छी रीति हम पढ़ेंगे हमारी पढ़ाई का पद इस मृत्युलोक में नहीं मिलता है। इस दुनियाँ में तो जो भी पढ़ाइयाँ पढ़ते हैं- मास्टरी की, डॉक्टरी की, इंजीनियरिग की व वकालत की यहाँ पढ़ाई पढ़ते हैं और उसका पद भी, प्रारब्ध भी यहीं भोग लेते हैं; लेकिन परमात्मा आकर के जो पढ़ाई पढ़ाते हैं उस पढ़ाई की प्रारब्ध इस कलियुगी जीवन में प्राप्त नहीं होनी है। कहाँ प्राप्त होती है? नई सतयुगी दुनियाँ में जा करके तुमको उसका पद मिलेगा; लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि तुम्हें शरीर छोड़ देना पड़ेगा। दुनियाँ में सारे ही शरीर छोड़कर जावेंगे तो नई दुनियाँ की रचना कहाँ से होगी ? इसलिए तुम जीते जी मरते हो। हम सतयुग में जाय राज्य करते थे, फिर 84 जन्म लिए। अभी ये अंतिम जन्म है। फिर हम वापस जावेंगे। मुक्तिधाम होकर के सुखधाम में आवेंगे। बाप बच्चों को कितना रिफ्रेश करते हैं। आत्मा समझती है इस 84 जन्मों के चक्र में हम आते हैं। परमपिता परमात्मा कहते हैं- मैं इस चक्कर में नहीं आता हूँ। आत्मा और परमात्मा का खास अंतर क्या है? आत्माएँ 84 के चक्र में आती हैं और परमपिता परमात्मा 84 के चक्र में नहीं आता। आत्मा समझती है इस 84 जन्मों के चक्कर में हमें आना पड़े। जो चक्कर में नहीं आए वो माला में नहीं आता और जो चक्कर में आए वही माला के नम्बर में आता है।

मुझे इस सृष्टि चक्र का सारा ज्ञान है। ये जानते हो पतित-पावन बेहद का बाप है तो बेहद के बाप को ही पावन बनाने के लिए आना होगा। मनुष्य तो हद में होते हैं। वो बेहद आत्मलोक का बाप तो एक ही है। तुम जानते हो हम आत्माएँ वहाँ की रहने वाली हैं। वहाँ से फिर शरीर में आए हैं। पहले-2 पार्ट बजाने कौन आए? इस सृष्टि पर आत्माएँ जब आती हैं तो पहले-2 कौन आकर के पार्ट बजाती है ? (किसी ने कहा- जिन्होंने बाप से वर्सा लिया होगा) किसने लिया? राम और कृष्ण की आत्माएँ जो हैं वही इस सृष्टि पर पहले-2 आती हैं। राम की आत्मा बड़े बाप के रूप में आती है और कृष्ण की आत्मा आज भी मंदिरों में यादगार छोटे बच्चे के रूप में आती है। तो अभी हम बच्चे इन बातों को समझे हैं। ये भी कई समझते हैं कि हम आत्मा हैं, निराकारी दुनियाँ से आते हैं। जो रिलीजियस माइन्डेड होते हैं उन्हीं की बुद्धि में रहता है। हम आत्माएँ निराकारी दुनियाँ में रहती हैं, यहाँ पार्ट बजाने आती हैं। इस समय तुम बच्चों की बुद्धि में सारी नॉलेज है। रिलीजियस माइन्ड किसको बोला? असली रिलीजियस माइन्ड वो रहते हैं जिनकी बुद्धि में ये जल्दी बैठ जाता है कि हम आत्मा हैं। जो अपने को आत्मिक स्थिति में जल्दी स्थिर कर लेते हैं वो हैं रिलिजियस माइन्डेड, धार्मिक बुद्धि और जिनकी बुद्धि में ये बात जल्दी नहीं बैठती कि हम भ्रकुटी में बैठी ज्योतिर्बिंदु आत्मा हैं वे सब हैं अधार्मिक। ओम् शांति।

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

–––

01.01.2025